फूलों पर मोहित जापानी मन

– प्रभा मित्तल

फूल तो कुदरत की वो नियामत हैं जो हर बुझे मन को खिला देते हैं। बियाबान में खिला जंगली आक भी बहार का आनन्द देता है। भारत में सरसों फूलते ही बसंत की मस्ती का आभास होने लगता है और फागुन आते–आते तो टेसू, सेमल और महुआ की महक मदमस्त कर देती है। पर जो भी हो जापान के पुष्प प्रेम का कहीं कोई सानी मिल पाना मुझे तो नामुमकिन ही लगता है। देश के किसी भी हिस्से में कोई फूल खिलते ही राष्ट्रीय समाचार बन जाता है।

मुझे आज तक याद है कि १९९६ में पहली बार जापान आते ही फरवरी में एक भारतीय परिवार ने उमे का फूल देखने जाने के लिये आमंत्रित किया। सच कहूँ उस समय फूल देखने से अधिक अनजान देश में भारतीय परिवार के साथ पिकनिक का उत्साह अधिक था। लेकिन उद्यान पहुँचकर एक फूल को देखने उमड़े जापानियों के हुजूम ने हैरान कर दिया। फिर शुरू होता है साकुरा का इंतज़ार। दिन–प्रतिदिन टेलीविज़न पर, अखबारों में अनुमान आने लगते हैं कि कब कहां पहला साकुरा खिलेगा। योजनाएँ बनने लगती हैं कि कब किसके साथ कहाँ हानामि होगी (फूल देखना)। शुरू में लगता था कि ये क्या पागलपन है, पर जब खुद साकुरा आच्छादित पेड़ों के नीचे बैठने का अवसर मिला तब अहसास हुआ कि यह पागलपन नहीं, प्रकृति से जुड़े रहने की बेसाख्ता चाहत है। यह जुनून सिर्फ उमे या सकुरा की बहार तक ही सीमित नहीं है। घर से स्टेशन तक के पैदल सफर में मोगरे और चमेली की खुशबू भी सहसा ठिठक जाने पर मज़बूर कर देती है। जापान में उनके नाम और किस्म भले ही अलग हों खुशबू तो जानी–पहचानी लगती है। फूलों से प्यार इस हद तक है कि किस्से–कहानियों और कविताओं से लेकर जापानी व्यँजनों, खासकर मिठाईयों में उनके रंगों और गंध का अहसास बसा रहता है। अपना अनुभव तो यही कहता है कि बाग–बगीचे हों या नदी–नहर का किनारा या बाज़ार हर जगह तरह–तरह के खिले–अधखिले फूलों की रौनक इस बेहिसाब भागते–दौडते देश में तन–मन को ऐसा सकून देते हैं कि शब्दों में ब्यान कर पाना कम से कम अपने वश में तो नहीं है। ❑

आदर्शों के प्रति श्रद्धा और कर्त्तव्य के प्रति लगन का जहाँ भी उदय हो रहा है, समझना चाहिए कि वहाँ किसी देवमानव का आविर्भाव हो रहा है।

अच्छाइयों का एक–एक तिनका चुन–चुनकर जीवन भवन का निर्माण होता है, पर बुराई का एक हलका झोंका ही उसे मिटा डालने के लिये पर्याप्त होता है।